Volume-5, No. 1, Feb.-2018, pp.Hin.-18-21

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० रवि कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर
श्रीबालाजी एकेडमी मुरादाबाद, उत्तर–प्रदेश भारत।

सार

शिक्षा केवल व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक संरचना का ही माध्यम नहीं वरन् राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का भी अभिन्न अंग है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने देश की प्राचीन गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा से अवगत और अनुप्राणित होता है। शिक्षा ही व्यक्ति को अतीत का बोध कराकर उसमें राष्ट्रीय चेतना प्रवाहित करती है। शिक्षा की सतत् ज्योति से आलोकित सांस्कृतिक परम्परा की पृष्ठभूमि में ही राष्ट्रीयता का सही स्वरूप उद्भाषित हो सकता है। शिक्षा ही व्यक्ति को राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण का संदेश देती है। किसी भी राष्ट्र की महत्ता एवं प्रगति उसके नागरिकों के शैक्षिक स्तर पर निर्भर करती है। सुशिक्षित नागरिकों के माध्यम से ही राष्ट्र का अतीत, वर्तमान से समाहित होकर कल्याणमय भविष्य की दिशा का निर्धारण करता है। शिक्षा की जितनी आवश्यकता पुरूष के लिए है उतनी ही नारी के लिए। नारी ने शिक्षा प्राप्त कर भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की है। अगर नारी शिक्षित होगी तो विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवा प्रदान करेगी। प्रायः देखने में आता है कि शिक्षण क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी योग्यता का परिचय दिया है, फलस्वरूप शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ, क्योंकि एक शिक्षिका बालक की विशेषताओं, आवश्यकताओं, क्षमताओं और योग्यताओं से पूर्ण रूप से परिचित होती है। जिस कारण वो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार करने की क्षमता रखती है।

आशय– राष्ट्रीय विकास की संकल्पना देशकाल के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। प्रत्येक देश के देशवासियों की आशाओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय विकास का स्वरूप समयानुकूल एवं पूर्ण निर्धारित नीति से निर्मित होता है। सरकार द्वारा बनायी गयी विकास की कोई भी योजना तब तक निष्फल है जब तक अशिक्षित लोगों की संख्या अधिक है। इस विकास योजनाओं का उद्देश्य निर्बल वर्ग तथा पिछड़े वर्ग का उत्थान करना होता है परन्तु यह वर्ग स्वयं में इतना जागरूक नहीं है कि वह अपने को इन योजनाओं से लाभ उठाने योग्य समझे। गरीबी इत्यादि के कारण कुछ अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय रोजगार में लगाना चाहते हैं क्योंकि उनके पास अच्छे स्कूल में भेजने के लिए धन नहीं है। गरीबों तक शिक्षा किस प्रकार पहुंचाई जाए यह एक समस्या का विषय है। यदि हम भारतवर्ष में स्त्रियों की साक्षरता प्रतिशत पर ध्यान दे तो हमें ज्ञात होगा कि यह पुरूषों की साक्षरता दर की तुलना में काफी कम है। अतः हमें स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। स्त्री शिक्षा की समस्या एक व्यापक समस्या है। आदिकाल से ही स्त्रियों का किसी न किसी रूप में शोषण होता रहा है। बाल्यावस्था बालक व बालिकाओं के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। छोटी उम्र में उचित शिक्षा व वातावरण न मिलने पर उनकी शारीरिक व मानसिक क्षमता क्षीण हो जाती है जिससे उनके विकास के मार्ग अवरूद्ध हो जाते हैं।

2. आवश्यकता एवं महत्त्व– किसी भी राष्ट्र अथवा विश्व को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार किसी बहुमंजिला इमारत के निर्माण हेतु मजबूत नींव की। अतः आवश्यक है कि किसी समाज राष्ट्र अथवा विश्व के समस्त नागरिकों हेतु शिक्षा की उचित व्यवस्था हो जिससे वह शिक्षा प्राप्त करके समाज और राष्ट्र की उन्नति में अपना योगादान कर सके। किसी राष्ट्र को प्रान्तवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद आदि से ऊपर उठाने का कार्य मात्र नागरिकों को उचित शिक्षा देकर ही किया जा सकता है। भारत जैसे विशाल तथा विभिन्न सम्प्रदाय वाले देश में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि सबके लिए शिक्षा के समान अवसरों की व्यवस्था की जाए क्योंकि राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता हैं। यदि नागरिकों को अपने अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का भी ज्ञान हो तथा वे उन्हें अपने आचरण का एक अंग बना लें, तभी प्रजातंत्र सफल हो सकता है। शिक्षा व्यक्तियों में आदर्श नागरिकता का विकास करती है तथा उन्हें अपने कर्तव्यों व अधिकारों से अवगत कराती है। उचित शिक्षा प्राप्त करके ही व्यक्ति ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी व देशभक्त नागरिक बनते है। इसी कारण प्रत्येक प्रजातान्त्रिक राज्य सार्वजनिक शिक्षा के प्रसार पर बल देता है। प्रायः देखा गया है

Scanned by CamScanner

कि शिक्षित महिलाएँ अपने व्यक्तित्व के प्रति अधिक सचेत होती हैं। आज बढ़ती शिक्षा, जागृति, आत्मनिर्भरता तथा कामकाज के विपुल सम्भानाओं ने नारी के दृष्टिकोण में पर्याप्त परिवर्तन ला दिया है वह पुरूष को संरक्षक नहीं अथवा साथी के रूप में देखना चाहती है। स्त्री की पुरूष के समान स्वतंत्र तथा स्वावलम्बी होना महत्वकांक्षा बन गया है। यही कारण है कि अर्थाभाव न होते हुए भी अनेक महिलाएँ अर्थोपार्जन करके आर्थिक स्वतंत्रता की उद्घोषणा भी कर रही है। प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं को जानकर संस्थाओं को सुझाव देने का प्रयास किया जायेगा।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

दास (1974) शिक्षा पर विद्यालय परिस्थितियों के प्रभाव का महत्त्व स्वीकारते हुए कहते हैं कि "विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं का बालक की उपलब्धि एवं कार्यकुशलता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

एम0 अग्रवाल (1980) में 'हन्दू व मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक व सांस्कृतिक स्वतंत्रता पर शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

उद्देश्य– हिन्दू व मुस्लिम महिलाओं की अभिवृत्ति में शिक्षा द्वारा निम्न में परिवर्तनों का ज्ञान करना सामाजिक संस्थाओं व रीति–रिवाजों के सन्दर्भ में।

न्यादर्श– मध्यम आय वर्ग की 300 हिन्दू व मुस्लिम महिलाएं हैं। प्रतिदर्श दिल्ली शहर का है। यह न्यादर्श आयु का है। प्रथम आयु वर्ग 17–25 वर्ष की शिक्षित महिलाएं, द्वितीय आयु वर्ग 40–60 वर्ष की शिक्षित व अशिक्षित महिलाएं आदि।

1. महिलाओं की परम्परागत अभिवृत्ति में परिवर्तन हेतु शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।
2. धर्म अभिवृत्ति परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त मुस्लिम महिलायें हिन्दू महिलाओं की अपेक्षा अधिक संकुचित पायी गई।
3. महिलाओं की विचारधारा में आयु का अन्तर कोई सार्थक प्रभाव नहीं डालता है।
4. काई स्क्वायर ने विश्लेषित किया कि शिक्षित महिलायें अधिक क्षेत्रों में आधुनिक विचार प्रदर्शित करती हैं जबकि दूसरे क्षेत्रों में वे अशिक्षित स्त्रियों के समान परम्परागत दृष्टिकोण की दिखाई दी।
5. संयुक्त परिवार की तुलना में एकांकी परिवार की महिलायें अधिक स्वतंत्र थी। लेकिन मुस्लिम महिलायें उपयुक्त दोनों समूहों में एक समान विचार रखती है।
6. भारतीय महिलाओं के आधुनिकीकरण स्तर पर पिता/पति के शैक्षिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

चौबे (2005) कहते हैं कि "शैक्षिक प्रक्रियायें जैसे पढ़ना, लिखना, सुनना, स्मरण करना आदि कार्य बालक के विकास में योग देते हैं जिनकी व्यवस्था प्रत्येक विद्यालय किसी न किसी रूप में अवश्यक करता है, परन्तु शारीरिक विकास की दृष्टि से विद्यालय में विविध खेलकूद एवं व्यायाम की व्यवस्था की जानी चाहिए। भ्रमण हेतु उद्यान, पार्क, चिकित्सा हेतु चिकित्सालय, क्रीडार्थ क्रीडा स्थल तथा सांस्कृतिक व अन्य कार्यो हेतु विभिन्न उपकरणों की व्यवस्था आवश्यक है। इसके अतिरिक्त समाज का यह भी दायित्व है कि वह शिक्षालयों को ऐसे वातावरण में स्थापित करें जहां शुद्ध जल, वायु एवं रोशनी उपलब्ध हो सकें। इसके अलावा बालक के सर्वागीण विकास हेतु उनको अपनी भावनाओं, योग्यताओं एवं क्षमताओं का स्वतन्त्र प्रकाशन करने का अवसर देना चाहिए। ये अवसर बालक को विविध सामाजिक, राष्ट्रीय एवं व्यक्तिगत समस्याओं पर चिन्तन करने, निर्णय करने तथा हल खोजने की सामर्थ्य उत्पन्न करते हैं। पत्र–पत्रिकायें, रेडियों, टी0वी0, प्रदर्शनी, मेले, पुस्तकालय, गोष्ठियां, सभायें, रंगमंच एवं चलचित्र आदि इन सामर्थ्यो के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। अतः विद्यालयों में इन समस्त सुविधाओं का होना आववश्यक है।"

मंगल (2010) कहते है– "किसी राष्ट्र की सुव्यवस्था एवं प्रगति उसी स्थिति में हो सकती है जबकि उस राष्ट्र के नागरिक उसकी प्रत्येक योजना एवं कार्य में पूर्ण योगदान कर सके। एक शिक्षित व्यक्ति ही शान के कार्य एवं विचार को भली प्रकार समझकर उसकी सफलता के लिए अपना सहयोग दे सकता है। जिस देश की अधिकांश जनता अशिक्षित होगी, उस देश की प्रगति की कल्पना तो क्या उसका अस्तित्व ही पल–पल खतरें में रहेगा।"

एम0 इन्दु कुमारी (2015) में– "केरल की मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा व सामाजिक स्तर"।

उद्देश्य– मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक जीवन स्तर को उठाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका का अध्ययन करना।

न्यादर्श– वर्तमान अध्ययन में 456 मुस्लिम महिलाएं व 150 पुरूषों पर न्यादर्श लिया गया है।

उपलब्धियाँ–

1. स्नातक स्तरीय शिक्षा प्राप्त महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहती थी वे व्यवसाय हेतु इच्छुक थीं।

Scanned by CamScanner

2. शैक्षणिक संस्थाओं की अस्थिरता व सामाजिक ढांचा मुस्लिम महिलाओं की उच्चतर शिक्षा में बाधा डालते हैं। इसके साथ धर्म की अनिवार्यता व शीघ्र विवाह की प्रवृत्ति भी महिलाओं की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती है।
3. महिलाओं को घर में बन्द करके रखने का दुष्ट चक्र भी स्त्री शिक्षा में कमी का कारण है। जिसके कारण महिलाओं में घर से बाहर की शैक्षिक प्रेरणा का अभाव पाया जाता है।

4. समस्या कथन एवं परिभाषिकरण

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

कामकाजी महिलायें–

जो महिलायें निजी एवं सरकारी संस्थानों में कार्यरत् है कामकाजी महिलाओं की श्रेणी में आयेगी।

गैर कामकाजी महिलायें– जो महिलायें निजी एवं सरकारी संस्थानों में कार्यरत् नहीं है गैर कामकाजी महिलाओं की श्रेणी में आयेगी।

समस्यायें–समस्याओं से तात्पर्य पारिवारिक, कार्यलयी, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं से है जो महिलाओं के जीवन को प्रभावित करती है।

5. अध्ययन के उद्देश्य–

1. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन
2. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का जाति के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन
3. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का धर्म के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन
4. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का व्यवसाय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन'

6. अध्ययन की परिकल्पनायें–

1. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में जाति के आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में धर्म के आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में व्यवसाय के आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी संख्या – 1

कामकाजी और गैर कामकाजी ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की समस्याओं का मध्यमान मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिलाओं	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
कामकाजी शहरी महिलायें	20	16.0	1.360	3.33'
गैर कामकाजी शहरी महिलायें	20	14.0	1.483	

व्याख्या– प्रस्तुत सारणी में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं का क्षेत्र के आधार पर मध्यमान मानक, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। जिस में कामकाजी महिलाओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 16.0 (1.360), और गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान मानक विचलन क्रमशः 14.0 (1.483) प्राप्त हुआ है। जबकि क्रान्तिक अनुपात 3.33 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक है। जो दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है अतः परिकल्पना संख्या 1 स्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या – 2

कामकाजी और गैर कामकाजी सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग महिलाओं की समस्याओं का मध्यमान मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिलाओं	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
कामकाजी महिलायें	20	14.90	2.12	3.74
गैर कामकाजी महिलायें	20	13.15	1.98	

व्याख्या– प्रस्तुत सारणी में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं का वर्ग के आधार पर मध्यमान मानक, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। जिस में कामकाजी महिलाओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.90 (2.12), और गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान मानक विचलन क्रमशः 13.15 (1.98) प्राप्त हुआ है। जबकि क्रान्तिक अनुपात 3.74 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक है। जो दोनों समूहों के मध्य

Scanned by CamScanner

सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है अतः परिकल्पना संख्या 2 स्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या – 3

कामकाजी और गैर कामकाजी धर्म के आधार पर महिलाओं की समस्याओं का मध्यमान मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिलाओं	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
कामकाजी महिलायें	20	15.50	1.90	4.79
गैर कामकाजी महिलायें	20	13.39	2.12	

व्याख्या– प्रस्तुत सारणी में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं का धर्म के आधार पर मध्यमान मानक, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। जिस में कामकाजी महिलाओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 15.50 (1.90), और गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान मानक विचलन क्रमशः 13.39 (2.12) प्राप्त हुआ है। जबकि क्रान्तिक अनुपात 4.79 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक है। जो दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है अतः परिकल्पना संख्या 3 स्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या–4

कामकाजी और गैर कामकाजी व्यासाय के आधार पर महिलाओं की समस्याओं का मध्यमान मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिलाओं	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
कामकाजी महिलायें	20	13.15	1.78	3.16
गैर कामकाजी महिलायें	20	12.22	2.09	

व्याख्या– प्रस्तुत सारणी में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं का व्यावसाय के आधार पर मध्यमान मानक, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। जिस में कामकाजी महिलाओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 13.15 (1.78), और गैर कामकाजी महिलाओं का मध्यमान मानक विचलन क्रमशः 12.22 (2.09) प्राप्त हुआ है। जबकि क्रान्तिक अनुपात 3.16 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक है। जो दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है अतः परिकल्पना संख्या 4 स्वीकार की जाती है।

7. निष्कर्ष–

1. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
2. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में जाति के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
3. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में धर्म के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
4. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में व्यवसाय के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, यू. आर. (1977), भारत के संदर्भ में शैक्षिक विचार और क्रिया में योगदान
2. भारद्वाज, दिनेश चन्द्र (1964), भारत के संदर्भ में शैक्षिक विचार और क्रिया में योगदान
3. भटनागर, सुरेश (2008), आधुनिक भारतीय शिक्षा व उसकी समस्यायें, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. गुप्ता, एन. एल. (2000), मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, दिल्ली।
5. पाण्डेय, रामशक्ल (2001), शैक्षिक निबंध, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2।
6. पाठक, पी. डी. (1974), शैक्षिक निबंध, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. राय, पी. एन. (2002), अनुसंधान परिचय, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2।
8. राय, पारसनाथ (1963), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
9. आर, समल (2012), अभिभावकों का अध्ययनरत् विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
10. सरीन एवं सरीन (2008), शैक्षिक अनुसंधान विधिया, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा – 2।
11. शेषाद्रि, सी. (1980), शिक्षा के समान अवसर

Scanned by CamScanner